आर0के0 कुँवर
निदेशक

उत्तराखण्ड शासन

माध्यमिक शिक्षा उत्तराखण्ड
ननूरखेड़ा, तपोवन रोड़, देहरादून
☎: 0135 2781440 फैक्स – 2781903
ई–मेल : edu_ua@yahoo.co.in
संख्या 29623 दिनांक 21/ 01/ 16

''गणतंत्र दिवस सन्देश''

विद्यालयी शिक्षा विभाग के समस्त अधिकारियों, संस्थाध्यक्षों, शिक्षक एवं शिक्षणेत्तर कर्मियों एवं छात्र–छात्राओं को 67वें गणतन्त्र दिवस की हार्दिक शुभकामनायें।

हमारे राष्ट्रीय पर्व हमें ऐसे राष्ट्रनायकों की याद दिलाते हैं, जिन्होंने अपना सर्वस्व राष्ट्र के लिए समर्पित कर दिया। 15 अगस्त 1947 को देश की स्वतन्त्रता के उपरान्त भारतीय संविधान लिखित रूप में बनकर तैयार हुआ संविधान सभा द्वारा भारतीय संविधान का ड्राफ्ट तैयार किया गया तथा विधायिका की संस्तुति के उपरान्त 26 जनवरी, 1950 को भारतीय संविधान लागू किया गया। देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद द्वारा शपथ ग्रहण करने एवं राष्ट्र द्वारा संविधान को अंगीकार करने के पश्चात भारतीय लोकतंत्र विश्व के मानचित्र पर सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न लोकतांत्रिक राष्ट्र के रूप में अस्तित्व में आया।

राष्ट्रीय पर्व जहां एक ओर हमें अपनी उपलब्धियों की समीक्षा करने और अपने लिए लक्ष्य निर्धारित करने हेतु विशिष्ट अवसर प्रदान करते हैं वहीं दूसरी ओर हमको अपने प्रयास में हुई कमियों को पहचानने, उन्हें दूर करने तथा अपने लिए नये लक्ष्य तय करने का अवसर भी प्रदान करते हैं।

लोकतांत्रिक समाज में नागरिकों का शिक्षित होना आवश्यक है। आदर्श नागरिक देश एवं समुदाय के विकास में अपनी क्षमता के अनुसार योगदान कर लोकतंत्र को मजबूती प्रदान करते हैं। ऐसी परिस्थिति में शिक्षण संस्थाओं से देश एवं समाज की अपेक्षायें होती हैं कि नौनिहालों को अपेक्षित ज्ञान, संस्कार तथा जीवनोपयोगी कौशल प्राप्त करने में सहयोग प्रदान करें।

शिक्षा किसी भी सभ्य समाज के लिए नींव–निर्माण का कार्य करती है तथा इस क्रम में शिक्षक सृजनकर्ता का कार्य करता है। मेरा शिक्षकों से आग्रह है कि शिक्षा को समाज की अपेक्षानुरूप व्यावहारिक, गुणवत्तापरक तथा सार्वभौमिक बनाने के लिए सतत् प्रयास करें। राज्य व केन्द्र सरकार द्वारा माध्यमिक शिक्षा के क्षेत्र में संचालित विभिन्न कार्यक्रमों यथा राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान, राष्ट्रीय आविष्कार अभियान, मॉडल स्कूल, राजीव गांधी अभिनव विद्यालय आदि में

नवाचारी क्रियाकलाप संचालित किये जा रहे हैं, ताकि इससे शिक्षा में गुणवत्ता संवर्धन से छात्र–छात्राऐं लाभान्वित हों। आज शिक्षा की पंहुच का लक्ष्य हम पूर्ण कर चुके हैं लेकिन गुणवत्ता आज भी चिंता का विषय है। माध्यमिक स्तर पर बाल मस्तिष्क संवेदनशील होता है इसलिए हमें और अधिक संजीगता से कार्य करना है, उसे सिर्फ किताबी ज्ञान तक सीमित न रखते हुए भविष्य में व्यवसाय के चयन हेतु भी प्रेरित करना है। इस दिशा में शैक्षिक प्रशासकों की भूमिका भी अहम है, सभी अधिकारी अपने स्तर पर विद्यालयों का नियमित अनुश्रवण करते हुए छात्र व शिक्षकों को सुधारात्मक सुझाव भी दें व शैक्षिक समस्याओं का तात्कालिक निदान करें एवं सामुहिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित करें।

सभी छात्र–छात्राओं को यह बात ध्यान में रखनी है कि "विद्याधनम् सर्वधनम् प्रधानम्" अर्थात शिक्षा से बढ़कर कोई धन नहीं है, इसे प्राप्त करने का जो स्वर्णिम अवसर प्राप्त हुआ है उसे व्यर्थ न गंवायें, मन लगाकर अपनी पढ़ाई करें ताकि भविष्य में एक आदर्श नागरिक बन सकें।

जय हिन्द!

(राकेश कुवेर)
निदेशक,
माध्यमिक शिक्षा उत्तराखण्ड।